International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 02-01-2026, Accepted: 02-02-2026, Published: 19-02-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 15-18

हिंदी पत्रकारिता और पश्चिम बंगालः एक ऐतिहासिक संबंध

डॉ. पारोमिता दास
अतिथि प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, हिंदी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
हिंदी पत्रकारिता के विकास में पश्चिम बंगाल की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक रही है। आधुनिक हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला इसी भूभाग पर रखी गई, जहाँ से इसका प्रसार धीरे–धीरे देश के अन्य क्षेत्रों तक पहुँचा। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में कलकत्ता भारत का प्रमुख राजनीतिक, प्रशासनिक तथा बौद्धिक केंद्र था। इसी काल में नवजागरण, समाज–सुधार आंदोलनों और आधुनिक वैचारिक चेतना का उदय हुआ, जिसने पत्रकारिता को सामाजिक जागरण का प्रभावी माध्यम बना दिया। सन् 1826 में पं. युगलकिशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित 'उदन्त मार्तण्ड' को हिंदी का प्रथम समाचारपत्र स्वीकार किया जाता है, जिसने हिंदी पत्रकारिता को एक स्पष्ट दिशा प्रदान की। इसके पश्चात राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता को केवल समाचार–प्रसारण तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक सुधार और जनचेतना का सशक्त साधन बनाया। उनके पत्रों के माध्यम से प्रेस–स्वतंत्रता, तर्कबुद्धि और आधुनिक दृष्टिकोण को व्यापक समर्थन मिला। आगे चलकर 'बंगदूत', 'सुधावर्षण' और 'हिंदी बँगवासी' जैसे पत्रों ने हिंदी पत्रकारिता को संगठित स्वरूप प्रदान किया और उसके वैचारिक क्षेत्र का विस्तार किया। इस प्रकार पश्चिम बंगाल हिंदी पत्रकारिता की एक प्रयोगभूमि के रूप में उभरा, जहाँ भाषा, साहित्य और राष्ट्रीय चेतना का सार्थक समन्वय दिखाई देता है। हिंदी पत्रकारिता की वैचारिक नींव बंगाल में ही निर्मित हुई, जिसे भारतीय सांस्कृतिक एकता और बहुभाषिक परंपरा का सशक्त प्रतीक माना जा सकता है।

मूल शब्दः आस्तिक, नास्तिक, दर्शन, ईश्वर, अभ्यास, वैराग्य

हिंदी पत्रकारिता के विकासक्रम में पश्चिम बंगाल की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही है। प्रायः यह माना जाता है कि हिंदी का विस्तार मुख्यतः उत्तर भारत से जुड़ा है, किंतु ऐतिहासिक सच्चाई यह है कि आधुनिक हिंदी पत्रकारिता की पहली व्यवस्थित पहल बंगाल की धरती पर ही हुई। यही वह क्षेत्र था जहाँ से हिंदी पत्रकारिता ने प्रारंभिक चेतना प्राप्त की और आगे चलकर देश के विभिन्न भागों तक अपनी पहुँच बनाई। इस कारण बंगाल का योगदान भारतीय भाषायी इतिहास में विशेष महत्व रखता है।अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के समय बंगाल भारत का सबसे प्रभावशाली राजनीतिक और बौद्धिक केंद्र बन चुका था। उस दौर में कलकत्ता ब्रिटिश शासन की राजधानी थी, जहाँ से प्रशासन, शिक्षा, न्याय और मुद्रण व्यवस्था का संचालन होता था। इसी वातावरण में नए विचारों का उदय हुआ और सामाजिक परिवर्तन की चेतना विकसित होने लगी। समाज–सुधार आंदोलनों के साथ–साथ विचारों के प्रसार की आवश्यकता भी महसूस की गई, जिसने पत्रकारिता के विकास को स्वाभाविक गति प्रदान की।

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूचना–तंत्र को शासन का आवश्यक साधन माना। कंपनी चाहती थी कि प्रशासन और जनता के बीच संवाद बना रहे, किंतु वह समाचारों के स्वतंत्र प्रसार से हमेशा असहज रही। उसे आशंका थी कि मुक्त सूचना जनता में जागरूकता उत्पन्न कर सकती है, जो औपनिवेशिक सत्ता के लिए चुनौती बन सकती थी।इसी पृष्ठभूमि में सन् 1768 ई. में कलकत्ता में मिस्टर बोल्ट द्वारा छापाखाना स्थापित करने का प्रयास एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में सामने आता है। उन्होंने व्यापारिक सूचनाओं, सामाजिक समाचारों और जनसाधारण से जुड़ी जानकारियों को लिखित रूप में प्रसारित करने की व्यवस्था की। यह प्रयास इस बात का संकेत था कि बंगाल में पत्रकारिता की आधुनिक चेतना धीरे–धीरे आकार ले रही थी। किंतु अंग्रेजी सरकार को यह गतिविधि असुरक्षित लगी और अंततः बोल्ट को देश छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया गया।इसके बावजूद बंगाल में प्रेस की गतिविधियाँ थमी नहीं। यद्यपि भारत में सबसे पहला छापाखाना गोवा में स्थापित हुआ था, फिर भी आधुनिक पत्रकारिता की वास्तविक भूमि बंगाल ही बनी। 29 जनवरी 1780 को जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा प्रकाशित बंगाल गजट को भारत का पहला समाचारपत्र माना जाता है। यह पत्र अपने निर्भीक विचारों और प्रशासनिक आलोचना के कारण विशेष रूप से चर्चित रहा। इसके बाद इंडियन गजट, बंगाल जर्नल और इंडियन वर्ल्ड जैसे अनेक पत्रों का प्रकाशन भी कलकत्ता से हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता को सामाजिक जागरण का प्रभावी माध्यम बनाया। उनके प्रयासों से संवाद कौमुदी और मिरात–उल–अखबार जैसे पत्र प्रकाशित हुए, जिनका उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं था, बल्कि समाज में तर्कबुद्धि का विकास करना और रूढ़ परंपराओं के विरुद्ध वैचारिक चेतना जगाना था। उनके लिए पत्रकारिता सामाजिक सुधार और जनसंवाद का माध्यम थी।हालाँकि ब्रिटिश शासन ने प्रेस की स्वतंत्रता पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाए, फिर भी विचारों के प्रवाह को रोका नहीं जा सका। बंगाल वह क्षेत्र बना जहाँ आधुनिक भारतीय पत्रकारिता की नींव सुदृढ़ हुई और जहाँ से जनचेतना, सुधार आंदोलन और राष्ट्रीय सोच को दिशा मिली। "आधुनिकता अर्थात एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जो पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक सेतु बना। चूंकि नवजागरण का अनुभव सबसे पहले बंगाल ने किया था, इसलिए स्वाभाविक था कि आधुनिकता भारत में बंगाल की खाड़ी से ही प्रवेश करती।"[1] यह सर्वमान्य तथ्य है कि बंगाल नवजागरण का केंद्र रहा। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे विचारकों ने सामाजिक सुधार, मानवतावाद और आधुनिक सोच को व्यापक आधार दिया। इस वैचारिक वातावरण का प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा और हिंदी भाषा तथा हिंदी पत्रकारिता ने भी इसी चेतना से प्रेरणा ग्रहण की। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में हिंदी पत्रकारिता ने अपने सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय चेतना के साथ एक सशक्त रूप प्राप्त किया।

कलकत्ता में उस समय हिंदी भाषी समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसा था जो अंग्रेजी शिक्षा से जुड़ चुका था। यह वर्ग नई वैचारिक चेतना, आधुनिक दृष्टिकोण और सामाजिक परिवर्तन के विचारों

से प्रभावित हो रहा था। उनके भीतर यह भावना प्रबल होने लगी थी कि हिंदी समाज को आधुनिकता से जोड़ा जाए, सामाजिक जागरण को व्यापक बनाया जाए और ज्ञान का प्रसार भाषा के माध्यम से किया जाए। इसी बौद्धिक वातावरण ने हिंदी पत्रकारिता के विकास की भूमि तैयार की।

हिंदी के प्रथम समाचारपत्र को लेकर लंबे समय तक मतभेद बना रहा। पहले यह धारणा प्रचलित थी कि 'बनारस अखबार' हिंदी का पहला पत्र था, किंतु ब्रजेंद्रनाथ वर्मा जैसे विद्वानों के गहन शोध ने इस धारणा को तथ्यात्मक आधार पर असत्य सिद्ध किया। सन् 1931 में प्रकाशित शोध–लेखों और ऐतिहासिक साक्ष्यों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि हिंदी का पहला समाचारपत्र वास्तव में 'उदन्त मार्तण्ड' ही था। बाद में 'विशाल भारत' पत्रिका में इस विषय पर हुए विमर्श के पश्चात इतिहासकारों ने सर्वसम्मति से 'उदन्त मार्तण्ड' को हिंदी पत्रकारिता का प्रथम पत्र स्वीकार किया। इस प्रकार यह पत्र आधुनिक हिंदी पत्रकारिता का आरंभिक और ऐतिहासिक चरण माना जाने लगा।[4] अप्रैल 1823 को ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रेस से संबंधित कठोर नियम लागू किए गए, जिनके अंतर्गत किसी भी समाचारपत्र के प्रकाशन के लिए सरकारी लाइसेंस आवश्यक कर दिया गया। ऐसे प्रतिबंधात्मक वातावरण के बावजूद कलकत्ता के कोलूटोला क्षेत्र से पं. युगलकिशोर शुक्ल ने विधिवत लाइसेंस प्राप्त कर 16 फरवरी 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन की प्रक्रिया आरंभ की। इसका पहला अंक 30 मई 1826 ई. को कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रकाशन से पूर्व उन्होंने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की थी कि यह पत्र देवनागरी लिपि में हिंदी भाषा का साप्ताहिक समाचारपत्र होगा।

'उदन्त मार्तण्ड' का उद्देश्य मात्र समाचार–संप्रेषण तक सीमित नहीं था। इसका मूल लक्ष्य भारतीय समाज में स्वतंत्र चेतना, आत्मबोध और वैचारिक जागरूकता का विकास करना था। इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशित संस्कृत श्लोक यह संदेश देता है कि समाचार–सेवा लोकहित के लिए है, न कि भय, दबाव या निजी स्वार्थ के लिए। उस समय बंगाल में हिंदी भाषी व्यापारी, कर्मचारी और प्रवासी समुदाय बड़ी संख्या में निवास कर रहे थे। यह पत्र विशेष रूप से इन्हीं हिंदीभाषियों तक समाचार पहुँचाने के उद्देश्य से निकाला गया था। यह नागरी लिपि और खड़ी बोली हिंदी में प्रकाशित होता था।

'उदन्त मार्तण्ड' के अंतिम अंक में इसके प्रकाशन–काल का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

मिति पौष बदी १, भौम, संवत् १८८४ (दिसम्बर 1827 ई.)

यह सूचना इस ऐतिहासिक पत्र के समापन को रेखांकित करती है। इसी अंक में प्रकाशित पंक्तियाँ उस समय की आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक पीड़ा को भावनात्मक रूप में अभिव्यक्त करती हैं–

आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त,
अस्ताचल को जात है दिनकर, दिन अब अन्त।

यद्यपि अंग्रेजी शासन की अप्रसन्नता और आर्थिक संकट के कारण यह पत्र अधिक समय तक प्रकाशित नहीं हो सका और 4 मई 1827 को बंद हो गया, फिर भी इसका प्रभाव अत्यंत गहरा रहा। इस पत्र ने शिक्षित हिंदी समाज में राष्ट्रीय चेतना और वैचारिक आत्मविश्वास को सशक्त किया।भाषिक दृष्टि से भी 'उदन्त मार्तण्ड' का विशेष महत्त्व है। इसमें ब्रजभाषा और खड़ी बोली के मिश्रित रूप का प्रयोग किया गया था। पत्र के संचालकों ने इस भाषा–रूप को 'मध्यदेशीय भाषा' कहा, जो उस काल में हिंदी के संक्रमणशील और विकसित होते स्वरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सन् 1829 में राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' नामक पत्र का प्रकाशन किया। यह पत्र बंगला, हिंदी और फारसी तीनों भाषाओं में निकलता था और इसका उद्देश्य सामाजिक सुधार, वैचारिक जागरण तथा राष्ट्रीय चेतना को स्वर देना था। इसके माध्यम से उन्होंने जनता को रूढ़ियों के विरुद्ध सोचने और आधुनिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात कलकत्ता से 'मार्तण्ड' और 'जगदीप भास्कर' जैसे हिंदी पत्र भी प्रकाशित हुए, जिनसे हिंदी पत्रकारिता का दायरा धीरे–धीरे व्यापक होने लगा।' उदन्त मार्तण्ड' के बंद हो जाने से पं. युगलकिशोर शुक्ल गहरे रूप से आहत हुए, किंतु उन्होंने अपने प्रयासों को विराम नहीं दिया। वे निरंतर जनजागरण की दिशा में सक्रिय बने रहे और इसी उद्देश्य से सन् 1845 में 'सामन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन किया। इस पत्र के माध्यम से उन्होंने एक बार फिर समाज में राष्ट्रीय चेतना और आत्मसम्मान की भावना को जाग्रत करने का प्रयास किया।आगे चलकर 1848 ई. में प्रकाशित 'समाचार सुधावर्षण' को हिंदी का पहला दैनिक समाचारपत्र माना जाता है। इसके प्रकाशन से हिंदी पत्रकारिता को एक नई गति और दिशा प्राप्त हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक समाचारपत्रों की संख्या और उनकी पाठक–संख्या दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि होने लगी। इसी काल में तार और रेलवे जैसी आधुनिक सुविधाओं के विकास ने समाचारों के त्वरित आदान–प्रदान को संभव बनाया, जिससे देश के दूर–दराज़ क्षेत्रों तक सूचनाएँ पहुँचने लगीं।

इस प्रकार कलकत्ता को केंद्र बनाकर हिंदी पत्रकारिता ने क्रमशः संगठित स्वरूप ग्रहण किया और समाज को वैचारिक रूप से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनी। "भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रों और पत्रकारों की भूमिका नकारी नहीं जा सकती। उन्होंने श्रेष्ठ पत्र दिए और अपना जीवन देश सेवा के लिए अर्पित कर दिया। हिंदी पत्रों को जो महत्व प्राप्त हुआ और जो आज भी कायम है, उसका आधार देश सेवा के लिए उनका त्याग और तपस्या ही है। देश के किसी भी आंदोलन को चाहे वह बंग–भंग के विरोध का स्वदेशी या बायकाट का या क्रांतिकारियों का आंदोलन हो चाहे चंपारण खेड़ा या बारडोली का सत्याग्रह हो हिंदी के पत्र प्राथमिकता देने में कभी नहीं चुके।"[2]

राजा राममोहन राय और पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक चेतना

उन्नीसवीं शताब्दी का आरंभ भारतीय समाज के लिए वैचारिक बदलाव का महत्वपूर्ण काल था। यह वह समय था जब परंपरागत मान्यताओं पर प्रश्न उठने लगे और तर्क, विवेक तथा सुधार की भावना धीरे–धीरे समाज में प्रवेश करने लगी। इसी पृष्ठभूमि में पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आई, जिसने जनमानस को नई सोच से जोड़ने का कार्य किया। इस वैचारिक परिवर्तन की प्रक्रिया में राजा राममोहन राय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

राजा राममोहन राय को भारतीय नवजागरण का अग्रदूत इसलिए माना जाता है क्योंकि उन्होंने समाज को रूढ़ विश्वासों और जड़ परंपराओं से बाहर निकालने का साहसिक प्रयास किया। उनके लिए पत्रकारिता केवल सूचनाओं के प्रकाशन तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह सामाजिक चेतना के निर्माण का प्रभावी साधन थी। उनका स्पष्ट विश्वास था कि जब तक जनता में विचार करने और प्रश्न उठाने की क्षमता विकसित नहीं होगी, तब तक किसी भी प्रकार की सामाजिक उन्नति संभव नहीं हो सकती।

वे चाहते थे कि सामान्य जन अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग बने तथा शासन–व्यवस्था को समझे। साथ ही उनका यह भी मानना था कि शासक वर्ग को जनता की वास्तविक समस्याओं और जीवन स्थितियों से अवगत होना चाहिए। इसी उद्देश्य से उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं को जनता और शासन के बीच

संवाद का माध्यम बनाया, जिससे विचारों का आदान–प्रदान संभव हो सके और समाज में जागरूकता का विस्तार हो।

राजा राममोहन राय ने 'बंगाल गजट', 'संवाद कौमुदी' और 'मिरातुल अख़बार' जैसे पत्रों के माध्यम से समाज की गहरी समस्याओं पर खुलकर विचार रखा। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों और प्रशासनिक अन्याय के विरुद्ध निर्भीक लेखन किया। इन पत्रों ने न केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को स्वर दिया, बल्कि सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना के विचारों को भी व्यापक आधार प्रदान किया। उनके लेखन की विशेषता यह थी कि उसमें भावनात्मक उत्तेजना के स्थान पर तर्क, विवेक और बौद्धिक संतुलन को प्रमुखता दी गई।

उस समय अंग्रेज़ शासक प्रेस की स्वतंत्रता को अपने शासन के लिए खतरा मानते थे। मद्रास के तत्कालीन गवर्नर सर टॉमस मुनरो का यह कथन कि विदेशी शासन और स्वतंत्र प्रेस साथ नहीं चल सकते, इसी औपनिवेशिक मानसिकता को प्रकट करता है। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में भी राजा राममोहन राय ने निर्भीक होकर प्रेस–स्वतंत्रता का समर्थन किया। सन् 1830 में समाचारपत्रों पर लगाए गए सरकारी प्रतिबंधों के विरोध में उनके नेतृत्व में जो आंदोलन हुआ, वह भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। इस संघर्ष की सफलता से पत्रकारों को नया आत्मबल मिला और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की नींव अधिक सुदृढ़ हुई।

सामाजिक और धार्मिक सुधारों को संगठित दिशा देने के लिए उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसके माध्यम से उन्होंने तर्कबुद्धि, नैतिक चेतना और मानवतावादी मूल्यों का प्रसार किया। इसी वैचारिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मुंगेराम राय जैसे पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता में आलोचनात्मक दृष्टि और गंभीर वैचारिक लेखन की परंपरा को और सशक्त बनाया।

इस प्रकार राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता को केवल सूचना–संप्रेषण तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन बना दिया। उनकी विचारशील दृष्टि, निर्भीक चिंतन और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता ने आधुनिक भारत की वैचारिक संरचना को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। "राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत माने जाते हैं।... वेदांत सूत्रों का अंग्रेजी में अनुवाद करने से पहले उन्होंने उसका बांग्ला तथा हिंदी में अनुवाद तैयार किया ।यह जताता है कि ज्ञान के प्रसार की दृष्टि से वह हिंदी को कितना महत्व देते थे। इस दृष्टि से 'बंगदूत' की स्थापना और उसका हिंदी खंड प्रकाशित करना एक क्रांतिकारी परंपरा थी ।यह परंपरा हिंदी पत्रकारिता की विशेषता हो गई।"[3]

बंगाल और हिंदी पत्रकारिता

'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन के बाद पश्चिम बंगाल से अनेक हिंदी समाचारपत्र सामने आए, जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को निरंतर आगे बढ़ाया। इनमें 'बंगदूत', 'प्रजामित्र' और 'सुधावर्षण' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'सुधावर्षण' को हिंदी का प्रथम दैनिक समाचारपत्र माना जाता है। इन पत्रों के माध्यम से हिंदी समाज में सामाजिक चेतना, राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रीय विचारधारा का प्रसार हुआ। धीरे–धीरे कलकत्ता हिंदी पत्रकारिता का एक सशक्त केंद्र बनकर उभरा। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद हिंदी पत्रकारिता का स्वर और अधिक स्पष्ट रूप से राजनीतिक हो गया। पश्चिम बंगाल से प्रकाशित हिंदी पत्रों ने औपनिवेशिक शासन की नीतियों की तीखी आलोचना की और जनता में राष्ट्रीय भावना को प्रबल किया। इन पत्रों ने केवल भाषा का विकास नहीं किया, बल्कि विचारों को भी दिशा दी। परिणामस्वरूप हिंदी पत्रकारिता सूचना–संप्रेषण तक सीमित न रहकर राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया का सक्रिय माध्यम बन गई।"'उदंतमार्तंड' से प्रेरणा प्राप्त कर (1829), 'बनारस अखबार',"(1850),' बुद्धि प्रकाश'(1852) 'मजहरुल सरूर' (1852), 'पजामी आजादी' (1857),' कवि वचन सुधा' (1867), 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (1873)' बालबोधिनी पत्रिका' (1878),' हिंदी प्रदीप' (1877), 'भारत मित्र' (1878) 'सारसुधा निधि' (1879) ...आदि पत्र प्रकाशित हुए जिनके द्वारा 'तोड़ो गुलामी की जंजीरें' 'बरसाओ अंगारा' और 'सत्त्वनिज भारत गहे' का नारा बुलंद किया गया। राष्ट्रीय चेतना के उद्‌बोधन एवं समाज के दिग्दर्शन हेतु हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव हुआ।"[4]

पश्चिम बंगाल की भूमि पर हिंदी को भाषा के रूप में सम्मान दिलाने की भावना भी पत्रकारिता के माध्यम से ही विकसित हुई। बंगाल जैसे बहुभाषिक प्रदेश में हिंदी को अपनी पहचान बनाए रखना एक सांस्कृतिक संघर्ष था, जिसे हिंदी पत्रों ने मुखर रूप दिया। इन पत्रों ने यह स्पष्ट कर दिया कि हिंदी किसी एक क्षेत्र की सीमित भाषा नहीं है, बल्कि वह पूरे देश को जोड़ने वाली एक व्यापक संपर्क भाषा है। इस प्रकार बंगाल में विकसित हिंदी पत्रकारिता ने भाषा, संस्कृति और राष्ट्रबोध,तीनों को सशक्त आधार प्रदान किया।

पश्चिम बंगाल : पत्रकारिता और साहित्य का संगम

पश्चिम बंगाल में हिंदी पत्रकारिता का विकास केवल समाचारों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसका गहरा संबंध साहित्यिक चेतना से भी जुड़ा रहा। अनेक साहित्यकारों ने पत्रकारिता को अपनी रचनात्मक और वैचारिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के बीच एक ऐसा जीवंत संवाद स्थापित हुआ, जिसने दोनों क्षेत्रों को समृद्ध किया।उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रकाशित 'हिंदी बँगवासी' इस परंपरा का एक प्रभावशाली उदाहरण था। इसका प्रकाशन 1880 ई. में कलकत्ता से आरंभ हुआ। 'हिंदोस्थान' पत्र के बंद हो जाने के बाद यह हिंदी का प्रमुख दैनिक माना जाने लगा। प्रारंभिक काल में साप्ताहिक 'बँगवासी' के संपादक योगेंद्रचंद्र बसु थे और उन्हीं के मार्गदर्शन में अमृतलाल चक्रवर्ती ने 'हिंदी बँगवासी' का संपादन संभाला। यह पत्र अपने समय के अन्य हिंदी समाचारपत्रों से कई दृष्टियों से भिन्न था।इसका आकार अपेक्षाकृत बड़ा था और इसका वार्षिक मूल्य दो रुपये निर्धारित किया गया था। इसमें नियमित रूप से चित्र प्रकाशित किए जाते थे, जो उस समय हिंदी पत्रकारिता में एक नवीन प्रयोग माना जाता था। पत्र में ताज़ा समाचारों के साथ–साथ विचारप्रधान लेख, सामाजिक टिप्पणियाँ तथा हल्के–फुल्के हास्य–व्यंग्य से जुड़े लेख भी सम्मिलित रहते थे, जिससे इसकी सामग्री बहुआयामी बन गई थी।

भाषा की दृष्टि से इसमें बंगला प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था, जिसका कारण यह था कि संपादक की मातृभाषा बंगला थी। कुछ पाठकों ने इस पर आपत्ति भी प्रकट की, किंतु इससे पत्र की लोकप्रियता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। पाठकों ने इसे सहज रूप में स्वीकार किया। अल्प समय में ही विशेष रूप से बिहार और संयुक्त प्रांत में इसके पाठकों की संख्या तीव्र गति से बढ़ी और लगभग दो हज़ार तक पहुँच गई, जो उस काल में किसी भी हिंदी पत्र के लिए उल्लेखनीय उपलब्धि मानी जाती थी।'हिंदी बँगवासी' ने समाचार प्रस्तुति की शैली में भी नवाचार किया। समाचारों को अलग–अलग वर्गों में विभाजित किया जाता था और 'कलकत्ता' तथा 'मुफ़स्सिल' जैसे शीर्षकों के अंतर्गत स्थानीय तथा बाहरी नगरों की सूचनाएँ दी जाती थीं। समाचारों को संक्षिप्त रखने पर विशेष ध्यान दिया जाता था, ताकि एक ही अंक में अधिक से अधिक सामग्री प्रकाशित की जा सके।इस पत्र की एक अनोखी व्यवस्था यह थी कि समाचार भेजने वालों के नाम प्रकाशित नहीं किए जाते थे। इससे साधारण लोगों में अपने क्षेत्र की खबरें भेजने का उत्साह बढ़ा और पत्र की लोकप्रियता

और भी व्यापक होती चली गई। प्रचार के लिए इसके पोस्टर विभिन्न नगरों में दुकानों, इक्कों और गाड़ियों के पीछे लगाए जाते थे, जिससे इसका प्रसार दूर–दराज़ इलाकों तक पहुँचा।प्रत्येक अंक में किसी न किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय प्रकाशित किया जाता था। साथ ही राजनीतिक घटनाओं और युद्ध संबंधी समाचारों को भी नियमित स्थान दिया जाता था। यदि बंगला 'बँगवासी' में कोई महत्वपूर्ण लेख छपता, तो उसका हिंदी रूपांतर 'हिंदी बँगवासी' में अवश्य प्रकाशित किया जाता था। इसके साथ–साथ साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन भी निरंतर चलता रहा। बालमुकुंद गुप्त का उपन्यास 'शिक्षित हिंदू बालक' सर्वप्रथम 'हिंदी बँगवासी' में प्रकाशित हुआ। यह एक बंगला रचना का हिंदी अनुवाद था, जो बाद में 'बँगवासी' पत्र में भी प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त बंगला महाभारत के अंशों के हिंदी अनुवाद भी इस पत्र के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाए गए।इस प्रकार 'हिंदी बँगवासी' केवल एक समाचारपत्र नहीं रहा, बल्कि उसने समाचार, साहित्य और सामाजिक चेतना को एक साथ जोड़ते हुए हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी। उसने यह सिद्ध किया कि पत्रकारिता केवल सूचना का साधन नहीं, बल्कि साहित्यिक संवाद और सामाजिक जागरण का प्रभावी मंच भी हो सकती है।

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में बंगाल से विकसित हिंदी पत्रकारिता का प्रभाव धीरे–धीरे उत्तर भारत तक पहुँचने लगा। समय के साथ प्रयाग, काशी, कानपुर और लखनऊ जैसे नगर हिंदी पत्रकारिता के नए केंद्र के रूप में उभरे। यद्यपि ये नगर आगे चलकर हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख स्थल बने, किंतु उनकी वैचारिक आधारभूमि पहले ही बंगाल में निर्मित हो चुकी थी।बंगदूत के संदर्भ में यह कहा गया कि "इस तरह हिंदी के आरंभिक पत्र हिंदी क्षेत्र से तो प्रकाशित हुए ही उनके संपादन और प्रकाशन भी अहिंदीभाषी लोगों ने किया।"[5] यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि हिंदी पत्रकारिता का आरंभ किसी एक भाषा–क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि वह व्यापक भारतीय चेतना का परिणाम था। इस दृष्टि से पश्चिम बंगाल हिंदी पत्रकारिता की एक प्रयोगशाला के रूप में सामने आता है, जहाँ भाषा, विचार और सामाजिक सरोकार एक–दूसरे से गहराई से जुड़े।

अतः यह कहना उचित प्रतीत होता है कि पश्चिम बंगाल और हिंदी पत्रकारिता का संबंध मात्र ऐतिहासिक संयोग नहीं है। यह संबंध भारतीय सांस्कृतिक एकता और भाषायी सहअस्तित्व का प्रतीक है। जिस प्रदेश की प्रमुख भाषा बंगला है, उसी भूमि पर हिंदी पत्रकारिता का जन्म होना भारतीय बहुभाषिक परंपरा की एक सशक्त और सुंदर मिसाल प्रस्तुत करता है। हिंदी पत्रकारिता की यात्रा बंगाल से प्रारंभ होकर धीरे–धीरे पूरे देश में फैल गई। इस विकास–क्रम में पश्चिम बंगाल ने मार्गदर्शक, प्रेरक और संरक्षणदाता की भूमिका निभाई। इसलिए यह निष्कर्ष पूर्णतः संगत है कि हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को पश्चिम बंगाल की भूमिका से अलग करके न तो समझा जा सकता है और न ही उसका सम्यक मूल्यांकन संभव है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र कृष्णबिहारी, हिंदी पत्रकारिता जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि, प्रकाशक–भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली,संस्करण– 2019, पृष्ठ संख्या 39
2. चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 10
3. वही,पृष्ठ संख्या 26
4. तिवारी (डॉ) अर्जुन, संपूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–221001, संस्करण–2018, पृष्ठ संख्या 77
5. चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली 110002, संस्करण 2018, पृष्ठ संख्या 26